International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

भारत में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले निर्धारित तत्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

अशोक कुमार
एम०फिल०, राजनीति विज्ञान विभाग,म०द० विश्वविद्यालय,रोहतक
Email : ashokbhoria1@gmail.com

शोध–आलेख सार : निर्वाचन लोकतंत्र की एक अनिवार्य क्रिया है, जिसमें मतदाता अपने मत का प्रयोग करके अपनी पसंद के उम्मीदवार को चुनते हैं। पहले मताधिकार सीमित हुआ करता था, किन्तु 20वीं शताब्दी में मनुष्य के निर्णय लेने की शक्ति में विश्वास करते हुए, विश्व के अधिकांश देशों में सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार को अपनाया गया। भारतीय संविधान–निर्माताओं ने भी सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार में विश्वास किया और प्रत्येक 21 वर्ष के व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के मताधिकार प्रदान किया। बाद में 1988 में 61वें संविधान संशोधन द्वारा 21 वर्ष से उम्र घटाकर 18 वर्ष कर दी गई। भारत में प्रत्येक वयस्क मताधिकार तो प्राप्त हो गया, किन्तु महत्वपूर्ण बात यह जानना है कि वह किन–किन तत्त्वों से प्रभावित होकर अपने इस अधिकार का प्रयोग करता है राजनीति शास्त्र के विघार्थियों के लिए यह विषय अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि मतदाताओं के इसी निर्णय पर लोकतंत्र की सफलता या असुलता निर्भर करती है। इससे पूर्व कि हम मतदान व्यवहार के निर्धारकों की चर्चा करें, हमारे लिए यह उचित रहेगा कि हम मतदान व्यवहार का अर्थ स्पष्ट करें।

मुख्य–शब्द : संघीय शासन–प्रणाली, एकात्मक व्यवस्था, भारतीय संविधान ।

मतदान व्यवहार का अर्थ– चुनाव के समय मतदाता जिस प्रकार से चुनाव प्रक्रिया के प्रति, चुनावी विषयों के प्रति व उम्मीदवारों के प्रति अपना रूख, रूझान व पसंद व्यक्त करते हैं, उसे राजनीति शास्त्र में मतदान व्यवहार की संज्ञा दी गयी है। अच्छे प्रतिनिधि चुने जाने के लिए वे परिस्थितियां अथवा तत्त्व सकारात्मक की होने चाहिएं, जो मतदाताओं के व्यवहार को प्रभावित करते हैं अर्थात् मतदाताओं के मत डालने के निर्णय को प्रभावित करते हैं। उन तत्त्वों को, जो मतदाता के व्यवहार को प्रभावित करते हैं, हम मतदान व्यवहार के निर्धारक तत्त्व का अर्थ स्पष्ट करें।

शोध–प्रविधिः इस शोध–पत्र के लिए शोध सामग्री अधिकांश रूप में द्वितीयक स्रोतों से ग्रहण की गई हैं। इसमें ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण के साथ–साथ शोधकर्त्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से प्राप्त की गई हैं।

भारत में आजतक जितने भी चुनाव हुए हैं, उनमें मतदाताओं का मतदान व्यवहार सकारात्मक नहीं रहा, विशेषरूप से आजादी के पहले तीस वर्षों में, जब देश मे सामाजिक आर्थिक पिछड़ापन था, आर्थिक विषमताएँ व्याप्त थी, शिक्षा अभाव था व महिलाओं को समाज में उचित दर्जा प्राप्त नहीं था। इन सभी के चलते अनेक मतदाता मत का प्रयोग करने से वंचित रह जाते थे, परिवार के सदस्य परिवार के मुखिया के आदेश के अनुसार मत का प्रयोग करते थे और मजबूर व छोटे किसान जमींदारों के अनुसार आदेश के अनुसार मत का प्रयोग करते थे। इतना ही नहीं, शिक्षा के 'अभाव में अधिकांश मतदाता कोई विकासपूर्ण निर्णय नहीं ले पाते थे। मतदान व्यवहार को निर्धारण करने वाले प्रमुख तत्त्व– पिछले 20–25 वर्षों में भारत में चुनाव–प्रक्रिया व लोकतंत्र का स्वरूप बदला है। शिक्षा व प्रेस के विस्तार से मतदाताओं को तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक विषयों की पर्याप्त जानकारी मिलती रहती है और यह जानकारी उनके निर्णय को प्रभावित करती है। वर्तमान समय में भारतीय मतदाताओं के व्यवहार को मुख्य रूप से निम्नलिखित तत्त्व प्रभावित करते हैं।

जाति– जाति भारतीय समाज की एक ऐसी सच्चाई है, जिससे व्यक्ति सबसे अधिक प्रभावित होता है। शिक्षा के प्रसार के बाद भी व्यक्तियों को अपनी जाति के प्रति लगाव कम नही हुआ है। यह देखने में आया है कि ज्यादा पढा–लिखा व्यक्ति अधिक जातिवादी होता है। राजनीतिक स्तर पर जाति का प्रभाव पहले से अधिक बढा है। राजनीति शास्त्र के प्रमुख

विद्वान प्रा. रजनी कोठारी ने अपनी विख्यात पुस्तक 'राजनीति में जाति6 में यह बताया है कि भारत में जाति का सामाजिक स्तर पर प्रभाव घटा है, जबकि राजनीतिक स्तर पर जाति का प्रभाव बढा है। जिस प्रकार से राजनीतिक दलों व दबाव समूहों के निर्माण में और आरक्षण को निश्चित करने में जाति प्रमुख भूमिका निभाती है, उसी प्रकार से मतदान व्यवहार को भी प्रभावित करने में भी जाति की निर्णायक भूमिका है। जब मतदान अपने मत का प्रयोग करता है, तो वह अपनी जाति से प्रभावित होकर अपनी जाति के उम्मीदवार के पक्ष में मत डालते हैं।

जाति आज भी मतदान व्यवहार का प्रमुख तत्त्व है। आंकड़े बताते हैं कि प्रायः जाट मतदाता जाट उम्मीदवार को और राजपूत मतदाता राजपूत उम्मीदवार को वोट देता है। इसी तरह अन्य जातियों का भी मत व्यवहार रहता है।

विचारधारा– विचारधार भी मतदान व्यवहार का एक प्रमुख निर्धारक तत्त्व है। भारत में कुछ ऐसे राजनीतिक दल हैं, जिनकी कोई न कोई विचारधारा है। ये खुलकर इसका प्रचार व प्रसार करते हैं, जिससे मतदाता अवश्य ही प्रभावित होते हैं। समाजवाद, साम्यवाद, उदारवाद, गाँधीवाद, लोहियावाद, हिन्दुवाद अनेक ऐसी विचारधाराएं प्रचलित हैं, जिनके अधार पर राजनीतिक दल बने हैं। इन्होने आगे चलकर चुनावी राजनीति को प्रभावित किया और ये मतदान–निर्धारण का प्रमुख तत्त्व बनीं। पश्चिम बंगाल में मार्क्सवादी विचारधार का प्रभाव है, जिसके आधार पर वहां मार्क्सवादी दलों को अधिकांश लोगों क`मत मिलते हैं। 1950 के बाद भारत में समाजवादी विचारधारा ने नागरिकों के मतदान व्यवहार को अधिक प्रभावित किया। यहां तक कि कांग्रेस में भी समाजवादी विचारधारा के अनेक समर्थक हैं।

धन की भूमिका– आज के भौमिकवादी युग में धन की अहम् भूमिका है। आज राजनीति का व्यवसायीकरण हो गया है। चुनावों में धन के द्वारा मतदाताओं को प्रभावित किया व लुभाया जाता है। गरीब व बेरोजगार व्यक्ति प्रायः धन के लालच में आकर अपना मत दे देते हैं। इस प्रकार धन, मतदान व्यवहार का एक निर्धारक तत्त्व बन जाता है। केवल गरीब व बेरोजगार व्यक्ति ही नहीं, बल्कि यहां विधायक व सांसद भी मताधिकार के लिए बिकते देखे गए हैं। यहां एक पार्टी से दूसरी पार्टी में जाने, पार्टी तोड़ने व जोड़ने में धन की अहम भूमिका रहती है। राज्य व स्थानीय स्तर की राजनीति में यह प्रवृत्ति बढती जा रही है। निःसंदेह धन मतदान व्यवहार को प्रभावित करने में अहम भूमिका निभा रहा है। 1996, 1998 व 1999 के लोकसभा चुनावों के अवसर पर जनता महंगाई से त्रस्त थी, इसलिए चुनाव परिणाम कांग्रेस पार्टी के विपक्ष में गया और दूसरे राजनीतिक दलों को इसका लाभ मिला।

दलीय नेतृत्व– व्यक्ति पूजा भारतीय राजनीति की विशेषता रही है। यहां प्रत्येक राजनीतिक दल किसी ऐसे विशिष्ट व्यक्ति या परिवार के चारों ओर घुमता है, जिसका अपना एक प्रभाव होता है। ऐसा नेता मतदाता के व्यवहार को प्रभवित करता है। प्रथम तीन आम चुनावों में कांग्रेस पार्टी की विजय का कारण पण्डित नेहरू का चमत्कारी नेतृत्व था। 1971 के चुनावों में कांग्रेस की भारी हार का कारण इन्दिरा गांधी की नेतृत्व क्षमता थी। 1996 व 2014 के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस की हार का एक कारण कुशल नेतृत्व का अभाव था। 16वीं लोकसभा के चुनावों में भारतीय जनता पार्टी की सफलता का एक प्रमुख कारण नरेन्द्र मोदी का कुशल नेतृत्व रहा है।

धर्म– जाति की तरह धर्म भी भारतीय मतदाताओं के व्यवहार को प्रभावित करने वाला प्रमुख तत्त्व है। भारत में मुस्लिम लीग, हिन्दु महासभा, शिवसेना व अकाली दल जैसे राजनीतिक दलों का गठन धर्म के आधार पर किया गया है। ये राजनीतिक दल धर्म के अधार पर वोट मांगते हैं। अयोध्या में राम मन्दिर के निर्माण के मुद्दे ने हिन्दु मतदाताओं को प्रभावित करने और भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में मतदान करने में प्रमुख भूमिका निभाई है। वी. पी. सिंह की सरकार भी राम जन्म भूमि से जुड़े मसले पर गिर गयी थी। आम तौर पर भारत के धर्म–भीरू मतदाता धर्म के आधार पर बंटे होते हैं।

आयु– मतदाताओं के मतदाता व्यवहार को आयु वर्ग भी प्रभावित करता है। 18 से 30 वर्ष की आयु के मतदाताओं का राजनीतिक व्यवहार 50 या 50 वर्ष से ऊपर के मतदाताओं से नहीं मिलता है। किसी भावनात्मक मुद्दे से कम उम्र के मतदाता जल्दी प्रभावित होते हैं। अधिक उम्र के मतदाताओं की राजनीतिक भागीदारी इतनी अधिक नहीं होती, जितनी की नवयुवकों की। प्रायः नौजवान उम्मीदवारों के प्रति मतदाताओं का रूझान अधिक होता है। लोकसभा चुनावों के विषय में डॉ. वेद प्रकाश 'वैदिक' लिखते हैं कि 40 वर्षिय राजीव गांधी उन मतदाताओं की स्वाभाविका पसंद बने, जिनकी आयु 21 से 35 वर्ष के बीच थी।

समकालीन मुद्दे– अन्य तत्वों के अलावा, चुनावों के समय चर्चित विषयों का मतदाताओं के व्यवहार पर सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ता है। 1977 के चुनावों में आपतकालीन ज्सरदतीयों का मतदाताओं पर अधिक प्रभाव रहा। 1985 के चुनावों में इंदिरा गांधी की हत्या से उत्पन्न सहानुभूति ने मतदाताओं को बहुत प्रभावित किया। 1989 के चुनावों में भ्रष्टाचार का मुद्दा मुख्य चुनावी मुद्दा रहा। इसी प्रकार महंगाई, बेरोजगारी, आतंकवाद और युद्ध ऐसे विषय हैं, जिन्होने भारतीय मतदाताओं को बहुत प्रभावित किया है।

स्थानीय उम्मीदवारों की छवि– चूनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों की मतदाताओं की नजर में क्या छवि है, इसका भी मतदाताओं के व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। उम्मीदवारों की नकारात्मक या सकारात्मक छवि जनता की नजरों में अवश्य होती है और यह किसी न किसी प्रकार से मतदाताओं पर प्रभाव डालती है।

दबाव समूह– जहां दबाव समूह राजनीतिक दलों को व प्रशासकों को प्रभावित करते हैं, वहीं ये अपनी पसंद उम्मीदवारों को सफल बनाने के लिए विभिन्न तरीकों से मतदाताओं को प्रभावित करने का काम भी करते हैं। भारतीय किसान यूनियन एवं जातिगत दबाव समूहों की मतदाताओं के व्यवहार को प्रभावित करने में उल्लेखनीय भूमिका रही है।

उम्मीदवारों का व्यक्तित्व– मतदान व्यवहार को निर्धारित करने में उम्मीदवार का अपना व्यक्तित्व भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला उम्मीदवार मतदाताओं को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल रहता है, विशेष रूप से तब, जब उसके प्रतिद्वन्द्वियों का व्यक्तित्व प्रभावशाली न हो। उदाहरण के लिए, स्व. इन्द्रजीत गुप्त मिदनापुर (पश्चिम बंगाल) से लगातार 10 बार लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए। इसी प्रकार पी. एम. सईद लगातार 9 बार लोकसभा चुनाव के लिए निर्वाचित हुए। ऐसा इनके धनी व्यक्तित्व के कारण ही हुआ।

व्यक्तिगत सम्पर्क– कोई प्रत्याशी मतदाताओं से कितना निकट से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करता है अथवा मतदाताओं को अपने प्रत्याशी के संबंध में कितनी जानकारी है, यह तथ्य भी मतदाताओं के निर्णय को प्रभावित करता है। अधिकांश मतदाता ऐसे होते हैं, जो व्यक्तिगत सम्पर्क के कारण किसी उम्मीदवार के पक्ष में मत डालते हैं। ऐसे मतदाता, जो किसी अन्य तत्त्व से प्रभावित नहीं होते, ऐसा करते हैं। दिसम्बर, 2013 के दिल्ली विधान सभा चुनावों में व्यक्तिगत सम्पर्क ने आम आदमी पार्टी को 28 सीटें दिलाने में उल्लेखनीय भूमिका रही।

ुनाव प्रचार– आधुनिक युग प्रचार का युग है। चुनाव–प्रचार से मतदाता बहुत अधिक प्रभावित होते हैं। प्रचार के कारण तो गलत बात भी ठीक लगने लगती है। कोई राजनीतिक दल अपने प्रत्याशियों के लिए कितना चुनाव–प्रचार करता है और चुनाव–प्रचार के लिए कौन–से साधन अपनाता है, इसका मतदाताओं पर प्रभाव पड़ता है। जितना अधिक प्रचार किया जाता है, उतनी ही अधिक सफलता की सम्भावना रहती है। इसी कारण सभी राजनीतिक दल चुनावों में प्रचार के विभिन्न साधनों का उपयोग करते हैं। ऐसा समझा जाता है कि 16वीं लोकसभा के चुनावों में प्रचार के विभिन्न साधनों का उपयोग करते हैं। ऐसा समझा जाता है कि 16वीं लोकसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी की सफलता का एक प्रमुख कारण चुनाव प्रचार पर पाँच हजार करोड़ रूपये खर्च करना भी रहा है।

दल अथवा प्रत्याशी की जीत की संभावना– भारत के अधिकांश मतदाताओं की एक अजीब सोच है। ये दल अथवा प्रत्याशी की जीत की सम्भावना को ध्यान में रख कर भी मतदान करते हैं। अनेक मतदाता यह निर्णय नहीं कर पाते कि वे किसके पक्ष में मत डालें। यदि उन्हे किसी तरह यह विश्वास हो जाए कि अमुक दल अथवा प्रत्याशी के जीतने की सम्भावना है, तो वे उसी दल अथवा प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करते हैं। भारत के चुनावों में 'लहर' महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सरकार की स्थिरता– भारत में मतदान व्यवहार इस बात पर भी निर्भर करता हे कि कौन–सा राजनीतिक दल एक स्थायी एवं सुदृढ सरकार प्रदान कर सकता है। भारतीय मतदाता आम तौर पर केंद्र में एक स्थायी तथा सुदृढ सकार चाहते हैं। उन्होने मार्च, 1977 में जनता पार्टी को इसी अशा से सत्ता सौंपी थी, किन्तु जब यह दल ऐसा करने में सफल नहीं हुआ, तो 1980 में लोकसभा चुनाव में उन्ही मतदाताओं ने जनता पार्टी के स्थान पर कांग्रेस को सत्ता सौंप दी। इसी आधार पर 1984 के चुनावों में कांग्रेस को सबसे अधिक जन–समर्थन प्राप्त हुआ था।

सामन्तशाही का प्रभाव– स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में सामंतशाही को समाप्त करके लोकतंत्र की स्थापना की गई और आगे चलकर राजाओं के प्रिवी–पर्स व अन्य सुविधाएँ समाप्त कर दी गई। भारत में सैद्धान्तिक रूप से राजतंत्र की कोई व्यवस्था नहीं है, लेकिन भारतीय जन–मानस पर आज भी सामन्तवादी व्यवस्था का प्रभाव बना हुआ है। आज भी आम भारतीय के मन में सामन्तो के प्रति विशेष सम्मान है। यद्यपि समय के साथ–साथ सामन्तशाही का प्रभाव कम होता जा रहा है, फिर भी बहुत से राजघराने आज भी राजनीति पर अपना आधिपत्य स्थापित किए हुए हैं। सिंधिया घराना मध्य प्रदेश के मतदाताओं को प्रभावित करता रहा है, जो जयपुर घराना राजस्थान के मतदाताओं को।

भाषा– भारत एक बहु–भाषाई राज्य है। यहां धर्म तथा जाति के पश्चात राजनीति में यदि किसी तत्व का प्रभाव है, तो वह भाषा ही है। भारत में भाषा के नाम पर चुनाव लड़े तथा जीते जाते हैं। यहां अनेक राज्यों में चुनावों का आधार भाषा होती है। दक्षिण में– विशेषकर तमिल नाडू– जो राजनीतिक दल हिन्दी का अधिक विरोध करता है, उतनी ही अधिक उसके जीतने की संभावना अधिक होती है।

क्षेत्रवाद– भारत में मतदाताओं के व्यवहार को नियन्त्रित तथा प्रभावित करने में क्षेत्रवाद की भी भूमिका होती है। आज भारत में छः राष्ट्रीय दल हैं, किन्तु भारतीय जनता पार्टी को छोड़कर कोई भी राष्ट्रीय दल इतना प्रभावशाली नहीं है कि वह क्षेत्रीय दलों के सहयोग के बिना सरकार का निर्माण कर सके। इसके कारण, भारत की राजनीति में एक और महत्वपूर्ण प्रवृत्ति स्थापित हो गई है और वह प्रवृत्ति है– गठबंधन की सरकार। अब एक–दो दलों के गठबंधन वाली नहीं,

20–22 दलों के गठबंधन सरकारें अस्तित्व में आने लगी हैं। केंद्र के साथ–साथ राज्यों में भी क्षेत्रीय दलों की गठबंधन सरकारें स्थापित होने लगी हैं। 2005 में पंजाब विधानसभा का चुनाव अकाली दल (बादल) तथा भारतीय जनता पार्टी ने मिलकर लड़ा और इनमें सफलता प्राप्त करने पर गठबंधन सरकार का निर्माण किया। उत्तर प्रदेश के समाजवादी पार्टी का 2012 में विधानसभा के चुनावों में विजयी रहना क्षेत्रवाद का नवीन उदाहरण है।

लुभावने नारे– भारतीय मतदाता समय–समय पर राजनीतिक दलों द्वारा उछाले गए लुभावने नारों से प्रभावित होते रहे हैं। 1971 के चुनावों इंदिरा गांधी का नारा था 'गरीबी हटाओ'। 'कांग्रेस का हाथ–गरीबी के साथ', कांग्रेस बार–बार भारतीय जनता पार्टी एक बार', 'अब की बार मोदी सरकार' ऐसे ही नारे हैं। 2004 के चुनावों में कांग्रेस ने प्रत्येक परिवार के एक सदस्य को 100 दिन का काम देने का वादा किया था। ऐसे लुभावने नारे, जो हवा में उछाले जाते हैं, जनता के मन को छू जाते हैं। जनता नारों से प्रभावित होकर किसी दल के पक्ष में मतदान कर देती है अथवा मशीन का बटन दबा देती है और वह दल बहुसंख्या में स्थान प्राप्त करके, सरकार का गठन करने में सफल हो जाता है।

युद्ध में सफलता– यदि देश में युद्ध के पश्चात मतदान होता है, तो मतदाता युद्ध में जीत या हार के ध्यान में रखकर मतदान करते हैं। युद्ध में जीतने की स्थिति में सत्तारूढ दल के चुनाव जीतने की संभावना अधिक रहती है। 1971 में पाकिस्तान के साथ युद्ध में विजय ने कांग्रेस पार्टी को लोकसभा चुनावों में भारी सफलता दिलवाई। 13वीं लोकसभा के चुनाव में कारगिल युद्ध ने भारतीय जनता पार्टी को सफलता दिलवाई। इस प्रकार भारतीय मतदाता युद्ध में सफलता तथा असफलता से प्रभावित होते हैं।

निष्कर्ष– भारत में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले उपर्युक्त तत्त्वों के वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि ये तत्त्व किसी विशेष क्षेत्र, वर्ग अथवा समुदाय को प्रभावित नहीं करते, वरन् सभी मतदाताओं को प्रभावित करते हैं। इस विषय में मतदाताओं की प्रवृत्ति कम अथवा अधिक समान है। भाषा, धर्म, समुदाय, क्षेत्रीयवाद व लुभावने नारे सभी को प्रभावित करते हैं। यहां मतदाता अक्सर धर्म, जाति, भाषा, सम्प्रदाय के नाम पर मतदान करते हैं। राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता के लिए यह आवश्यक है कि मतदाता इन संकुचित भावनाओं से ऊपर उठकर मतदान करें। लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा हेतु एक व्यापक राजनीतिक दृष्टिकोण का अपनाया जाना अनिवार्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1 कुमार डॉ0 राकेश 'हरिाणा में क्षेत्रीय दलों की भूमिका प्रमुखत्या इनेलो का अध्ययन' पी.एच.डी. शोध ग्रन्थ, 2017
2 मितल, एस.एस., 'हरियाणा : ए हिस्टोरिक्ल पर्सपेक्टिव' प्रकाशन एटलांटिक, नई दिल्ली, 1976।
3 कश्यप सुभाष, 'गठबन्धन की सरकार और भारत में राजनीति, 'प्रकाशन एन. बी.डी.टी, नई दिल्ली, 1997
4 सुरेन्द्र कटारिया, भारत में लोक प्रशासन , आरबीएसए पब्लिशर्स, जयपुर, पेज–221.
5 एन.एस. कहलोत, न्यू चैलेन्ज टू इंडियन पॉलिटिक्स टीप एण्ड दीप पब्लिकेशन, प्रा. लि., दिल्ली.
6 रमेश अरोरा, रजनी गोयल, इंडियन एडमिनिस्ट्रेशन इंस्टीटयूट एण्ड इश्यू, विश्व प्रकाशन, नई दिल्ली
7 एम.पी. सिंह, हिमांशु राय, इंडियन पोलिटिक्स सिस्टम, मानक पाब्लकेशन, नई दिल्ली।
8 चौधरी नीरजा 'मोदी प्रभाव विस्तार' दैनिक जागरण, रोहतक, 20 अक्टूबर 2014।
9 खेड़ा हरीश 'जिसकी दिल्ली उसका हरियाणा' अमर उजाला, रोहतक 27 अगस्त 2014।
10 बंसल पवन 'हरियाणा में पहली बार भाजपा बहुमत के साथ' जनसत्ता, दिल्ली, 20 अक्टूबर 2014।
11 यादव के.सी. 'सर छोटू राम (1881–1945) अन्डरसटैन्डिग हिज पालिटीकल आडियालाजी वर्ल्ड वियू अचीवमेंट, जरनल आफ पियूप्ल एण्ड सोसायटी आफ हरियाणा', बिनायल पब्लिकेशन ऑफ म.द.वि.,रोहतक, अप्रैल 2010 ।
12 चौधरी डी.आर. 'हरियाणा इल्यूजन एण्ड रियलिटि फेडरल इण्डिया पब्लिशर', चण्डीगढ 1999 ।
13 दहिया भीम सिंह 'हरियाणा में सत्ता की राजनीति : जाति व धन का खेल' ज्ञान प्रकाशन, नई दिल्ली 2009 ।
14 कश्यप सुभाष 'दल–बदल व राज्य की राजनीति' श्रीवाली प्रकाशन, मेरठ 1970 ।
15 यादव जे.एन. सिंह 'हरियाणा स्टडी ऑफ हिस्ट्री एण्ड पॉलिटिक्स, प्रकाशन मनोहर', गुरूग्राम 1976।
16 चाहर एस.एस. 'डाइनामिक्स ऑफ इलैक्ट्राल इन हरियाणा प्रकाशन संजय, नई दिल्ली 2008 ।